International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-02-2023, Accepted: 15-03-2023, Published: 30-03-2023
Volume 9, Issue 2, 2023, Page No. 27-30

हिन्दी भाषा पर तुर्की छात्रों का भाषाई दृष्टिकोण

ओज़ान जेम आयदन
एम.ए, इंडोलॉजी, अंकारा विश्वविद्यालय, अंकारा, तुर्की

सारांश
स्पष्ट है कि हिंदी एक बड़े क्षेत्रफल में बोली जाने वाली भाषा है, न केवल भारत में बल्कि अनेक देशों में भी। साथ ही हिंदी शिक्षा भी विदेश में व्यापक है। जर्मनी, कनाडा, इंग्लैंड जैसे देशों में हिंदी शिक्षा उपलब्ध है और इन देशों में से एक तो तुर्की भी है जहाँ संस्कृत से लेकर वेदों तक पढ़ाया जाता है। १९३५ से लेकर आज तक तुर्की के अंकारा विश्वविद्यालय में संस्कृत, हिंदी (१९९० से), भारत का इतिहास, हिन्दू धर्म, बौद्ध धर्म आदि विषयों का अध्ध्यन इंडोलॉजी विभाग में उपलब्ध है। जब तुर्की भाषी लोग हिंदी या कोई भी हिंदी जैसी भारतीय भाषा सीखते हैं तो उन्हें सीखते समय क्या कठिनाई या आसानी मेहसूस होती है? वे सीखना कहाँ से शुरू करते हैं और किस सामग्री का प्रयोग करते हैं? हिंदी जब विदेशी भाषा के तौर पर पढ़ाई जाती है तो पाठ्यक्रम में क्या रहता है और किस क्रम में पढ़ाया जाता है? सीखने में कितना समय लगता है? इनके अतिरिक्त क्या तुर्की भाषी लोग हिंदी समझते भी हैं? हिंदी पढ़ने वाले तुर्की छात्रों की मातृभाषा तुर्की होने की बात हिंदी सीखने में किन पहलुओं से प्रयोजनमूलक है तथा किन परिस्थितिओं में जटिल लगती है? इन तमाम मुद्दों में एक भाषाई दृष्टिकोण के माध्यम से पाँच चरणों में स्पष्टता लाना इस शोध कार्य का उद्देश्य रहा है।

मूल शब्दः हिंदी, तुर्की, हिंदी शिक्षा, तुर्की भाषा, विदेश

तुर्की की राष्ट्रभाषा तुर्की ही है और कुछ क्षेत्रीय भाषाएँ बोली जाने के बावजूद भी तुर्की में कोई बहुभाषिकता नहीं है जैसे भारत में है। यद्यपि शब्दावली पर अधिकतम फ़ारसी और अरबी का असर पड़ा है, तुर्की में अरबी या फ़ारसी दोनों न समझी न बोली जाती है। इस सन्दर्भ में हिंदी और तुर्की में शब्दावली और कई अन्य भाषाई तत्वों में अधिक समानता पायी जाने के साथ ही उतना ही अंतर भी पाया जाता है। तुर्की में सर्वोत्तम हिंदी शिक्षा तुर्की की राजधानी अंकारा के अंकारा विश्वविद्यालय में प्रदान की जाती है। अंकारा विश्वविद्यालय के इंडोलॉजी विभाग में और TÖMER (अंकारा विश्वविद्यालय विदेशी भाषाओं का अनुसंधान एवं शिक्षा केंद्र) में भी कई छात्र आज हिंदी पढ़ रहे हैं।

तुर्की में विश्वविद्यालय तथा शिक्षा केंद्रों में हिंदी जब पढ़ाई जाती है तो सर्वप्रथम हिंदी की लिपि पढ़ाई जाती है। तुर्की छात्रों को हिंदी की लिपि यानी देवनागरी अधिक रोमांचक तथा मनोरम प्रतीत होती है, इसका कारण यह हो सकता है कि तुर्की भाषा किसी स्क्रिप्ट में नहीं बल्कि लैटिन अल्फाबेट में लिखी जाती है। इस सन्दर्भ में "स्क्रिप्ट" सीखना तुर्की भाषिओं के लिए नयी बात है और दूसरी तरफ़ से किसी भारतीय भाषा की लिपि सीखना उनके लिए ज़्यादा आकर्षक बात है। तुर्की में पहले अरबी लिपि चलती थी परन्तु तुर्की के राष्ट्रपति मुस्तफ़ा कमाल अतातुर्क का मानना था कि तुर्की भाषा को अरबी लिपि में लिखना उचित नहीं है क्यूंकि अरबी के कई अक्षर तुर्की से मिलते जुलते नहीं है साथ ही अरबी लिपि सीखना जनता के लिए कठिन है और दूसरी तरफ़ से तुर्की लोग अरबी या फ़ारसी नहीं हैं तो उन्हीं की लिपि में क्यों लिखेंगे?। यह विचार रखते हुए अतातुर्क ने समूचे देश में लिपि क्रांति ला दी है। अतातुर्क की निम्नलिखित पंक्तियाँ लिपि क्रांति को इस तरह प्रकट करती हैं:

"आज से हमारा एक महत्वपूर्ण कर्तव्य है जो कि नयी तुर्की लिपि को जल्द से जल्द सीखना। हम सभी को महिलाओं, मर्दों, बच्चों और मज़दूर लोगों से लेकर नाविकों तक जनता के हर क़िस्म के लोगों को यह नयी लिपि पढ़ाना दायित्व समझना चाहिए। यह कर्तव्य पूरा करते हुए प्रत्येक नागरिक यह याद रखे कि किसी समाज के यदि दस–बीस प्रतिशत लोगों को पढ़ना लिखना आता है और बाकी अस्सी–नब्बे प्रतिशत लोगों को नहीं आता तो यह उनके लिए शर्म की बात होगी। "

विषयवस्तु

तुर्की में देवनागरी, वर्णमाला और मात्राएँ कम से कम दो सप्ताह में या अधिकतम एक महीने में पढ़ाई जाती है। तुर्की की वर्णमाला में २९ अक्षर होते हैं इसलिए छात्रों को हिंदी की वर्णमाला सीखते समय लगभग दुगने अक्षर सीखने होते हैं। देवनागरी तुर्की छात्रों को कठिन नहीं लगती क्यूंकि कई अन्य लिपियों की अपेक्षा देवनागरी एक ऐसी सुव्यव्यस्थित लिपि है जिसमें पर्याप्त स्पष्टता है और अन्य भाषावैज्ञानिक इस बात पर सहमति रखते हैं। उदाहरण के लिए उर्दू की लिपि में एक ही अक्षर "उ", "ऊ" और "ओ" की जगह प्रयोग होता है तो इससे भ्रम कभी कभी पैदा होता है जबकि देवनागरी में प्रत्येक ध्वनि के लिए एक अक्षर प्रयोग किया जाता है। लिपि सीखने के सन्दर्भ में तुर्की छात्रों के दृष्टिकोण पर अधिक विस्तृत रूप से टिपण्णी या शोध करने को कुछ ही मुद्दे मिलते हैं जिनके वर्णन ऊपर प्रस्तावना और विषयवस्तु में किये गए हैं। पहला चरण बताते हुए क्रम के अनुसार जाएँ तो लिपि के बाद निसंदेह उच्चारण की बात आ जाती है जो कि दूसरा चरण है। हिंदी के १३ स्वरों में से "आ, ई, ऊ, ए, ऐ, औ" यानि ६ स्वर और ३३ व्यंजनों में से "क, ग, च, ज, त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व, श, स, ह" यानि १७ व्यंजन तुर्की भाषा में मौजूद हैं तो तुर्की छात्र बिना चेष्टा किये आसानी से इन अक्षरों को सीख लेते हैं। रही बात जटिलता की, तुर्की छात्रों को उच्चारण के सन्दर्भ में जटिलता तब मेहसूस होती है जब उन्हें "ख, घ, छ, झ, थ, ध, फ, भ" आदि एस्पिरेटेड ध्वनियाँ (जिनमें वायु हो) या "ङ, ञ, ट, ड, ण, ष, ड़, ढ़" जैसी ध्वनियाँ सीखनी होती हैं जो तुर्की भाषा में और अंग्रेज़ी जैसी कई भाषाओं में मौजूद नहीं हैं। ऐसी ध्वनियों को अच्छी तरह से सीखने के लिए उन्हें प्रयत्नशील होना पड़ता है। उदाहरण के लिए कोई तुर्की बोलने वाला "नगर, नारी, आसमान, पानी, पैसा" जैसे शब्दों का उच्चारण अच्छे से कर सकता है किन्तु "ढोलक, पढ़ाई, बाण, लड़का, ठान" जैसे शब्दों का उच्चारण अच्छे से शायद न कर पाएँ। यह भी पाया जाता है कि तुर्की छात्र शुरू में "ड़" और "ढ़" को "र" बोलते हैं। इन ध्वनियों को भव्य तरीक़े से सीखने के लिए तुर्की छात्रों को उच्चारण स्थान और उच्चारण करते समय जीभ मुँह में कहाँ रखी जाती है यह सब प्रगतिशील रीति से

सीखना होता है। TÖMER (अंकारा विश्वविद्यालय विदेशी भाषाओं का अनुसंधान एवं शिक्षा केंद्र) में हिंदी के उच्चारण स्थान अधिक विस्तृत तरीक़े से पढ़ाये जाते हैं। दूसरी तरफ़ से हिंदी में प्रचलित तथा लोकप्रिय उर्दू शब्दों का प्रयोग कोई तुर्की अच्छे से कर सकता है क्यूंकि उर्दू–तुर्की में समानता कुछ ज़्यादा है। यह तो ज्ञात है कि हज़ारों शब्द दोनों भाषाओं में मिलते जुलते हैं और प्रायः उसी शाब्दिक अर्थ में प्रयोग किये जाते हैं। अक्षरों की बात की जाए तो उर्दू के अक्षरों में से "फ़, ग़, ज़" सामान्य तुर्की में उपलब्ध हैं परन्तु "क़" अक्षर पुरानी तुर्की में पाया जाता है। इस तरह के कुछ अक्षरों को तुर्की भाषा में बिसरा दिया गया है। तुर्की भाषा से हिंदी में शामिल हुए "बेग़म, बहादुर, बीबी,चम्मच, कैंची, तोप, तोपचू और तमग़ा" जैसे कुछ शब्द भी समानता के सन्दर्भ में पाये जाते हैं। उर्दू को मिलाकर यह कहना संभव है कि हिंदी और तुर्की के शब्दावली में एक बड़ी समानता है इसलिए शब्दावली के सन्दर्भ में हिंदी पढ़ने वाले तुर्की छात्रों को बड़ी आसानी होती है। एक और बात यह है कि इस समानता को लेकर कभी कभार तुर्की छात्र भ्रम में पड़ जाते हैं कि क्यूंकि कुछ शब्दों के समान होने के बावजूद शाब्दिक अर्थ हिंदी और तुर्की में अलग होते हैं। जैसे कि मुहब्बत का मतलब हिंदी/उर्दू में प्यार होता है जबकि सामान्य तुर्की में बातचीत ही होता है। कमर का मतलब हिंदी में कमर ही होता है और तुर्की में बेल्ट। हिंदी में जानवर शब्द के लिए तुर्की में हैवान शब्द चलता है और तुर्की में हैवान शब्द के लिए हिंदी में जानवर। ये सारी चीज़ें हिंदी पढ़ने वाले तुर्की छात्रों को कभी कभी आसान प्रतीत होती हैं और कभी कभी जटिल।

तुर्की छात्रों के लिए बात आगे से और भी जटिल हो जाती है। तुर्की छात्र भाषा की गहराई में घुसते हुए व्याकरण, लिंग एवं वाक्य संरचना जैसे विषयों से परिचित हो जाते हैं जो कि इस लेख के विषय का तीसरा चरण है। व्याकरण शुरू में सरल होने के बावजूद लिंग की बात आ जाने के साथ ही जटिलता फिर से शुरू हो जाती है। तुर्की भाषा में और न किसी और तुर्किक भाषा में लिंग नहीं होता है। हिंदी की वाक्य संरचना में लिंग का बड़ा हिस्सा रहता है जबकि अंग्रेज़ी में मात्र पुरुषवाचक सर्वनामों के लिए लिंग का प्रयोग होता है। तुर्की भाषा में तो लिंग का प्रयोग बिलकुल भी नहीं होता तो यह प्रश्न उठता है कि तुर्की भाषा में पता कैसे चलता है कि किसी पुरुष की बात हो रही हो या स्त्री की। इसका उत्तर "सन्दर्भ" है। तुर्की बोलने वाले सन्दर्भ से ही समझ जाते हैं कि बात पुरुष की हो रही है या स्त्री की। यह कहना संभव है कि तुर्की छात्र जब हिंदी व्याकरण सीखने लगते हैं तो लिंग की बात उन्हें थोड़ी जटिल लगती है किन्तु अभ्यास करते करते वे सीख जाते हैं, जैसे कि उदाहरण के तौर परः

"राजा ने अपनी घड़ी ठीक करवायी है।"
"Raja saatini tamir ettirdi."

इस उदाहरण में "घड़ी" शब्द के लिंग की वजह से "अपनी" शब्द और "करवायी" क्रिया दोनों स्त्रीलिंग के अनुसार प्रयोग किये गए हैं। घड़ी की जगह कोई एकवचन पुल्लिग शब्द होता तो "अपना" और "करवाया" होता, बहुवचन पुल्लिग शब्द होता तो "अपने" और "करवाये" होता। इसके अतिरिक्त इस वाक्य में "ने" न होता तो कर्ता कारक के ही लिंग के अनुसार वाक्य की पूरी संरचना बनती। दूसरी तरफ़ से तुर्की भाषा में उसी उदाहरण में किसी भी भाषाई तत्व में कोई भी लिंग नहीं है। केवल कर्ता कारक का ही लिंग स्पष्ट रहता है जब तक नाम या ऐसे किसी शब्द का प्रयोग किया जाता है जिससे क्रिया करने वाले के लिंग का पता लग जाता है। इस लेख को पढ़ने वालों को शायद तुर्की वाक्य संरचना ज़्यादा जटिल लगे, यह ज़रूर है कि तुर्की छात्रों को हिंदी वाक्य संरचना अधिक जटिल लगती है। भाषा की संरचनाओं को समझना भाषा सीखने में प्राकृतिक है और विदेशी भाषा के तौर पर भाषा सीखने का एक मूल सिद्धांत है। इसमें भाषाओं की तुलना नहीं है, विदेशी छात्रों का अनुभव है और वह अनुभव भी सीखी जाने वाली भाषा और सीखने वालों की मातृभाषा पर आधार है। लिंग के पश्चात् वाक्य संरचना, प्रत्यय जैसे अन्य व्याकरणिक विषयों की बात आ जाती है जो चौथा चरण है। वास्तव में तुर्की और हिंदी की वाक्य संरचना कुछ हद तक मिलती जुलती है। दोनों भाषाओं की वाक्य संरचना में तत्वों का क्रम मूल रूप से निम्न में प्रकट हैः

(कर्ता–कर्म–क्रिया)
"मैं भोपाल जाता था।"
" Ben Bhopal'a giderdim."
"तुमने उससे मेरे बारे में बात की।"
"sen onunla benim hakkımda konuştun."

वाक्य सरल हो या जटिल जब तक वाक्य संरचना में समानता रहती है तब तक तुर्की छात्रों को हिंदी में वाक्य बनाने में आसानी होती है। हर भाषा की अपनी संरचना तथा अपने कुछ व्याकरणिक तत्व होते हैं जो कभी कभार किसी और भाषा में नहीं होते और अगर होते भी हैं तो बिलकुल वैसे के वैसे समान नहीं होते। हमें उन चीज़ों को सीखने में ज़्यादा जटिलता मेहसूस होती है जो हमारी भाषा में मौजूद न हों। उदाहरण के तौर पर हिंदी व्याकरण में "ने, को" जो हैं तुर्की भाषा में मौजूद नहीं हैं तो तुर्की छात्रों को कभी कभी ऐसे वाक्य बनाना जटिल लगता है जिनमें "ने" या "को" का प्रयोग किया गया हो। उदाहरणः

हिंदीः मैंने होमवर्क किया।
तुर्कीः Ben ödevimi yaptım. (मैं होमवर्क किया।)
हिंदीः उसको आने में देर लगेगी।
तुर्कीः O gelirken gecikecek. (वह लेट होगा/गी)

इसके आलावा हिंदी के कंपाउंड वर्ब्स भी तुर्की छात्रों को अनोखी सी लगती हैं क्यूंकि तुर्की भाषा में अलग ही ढंग से सन्दर्भ पर ज़ोर दिया जाता है। जैसे किः

हिंदीः उसने किताब पढ़ ली।
हिंदीः उसने किताब पढ़ दी।
तुर्कीः Kitabı okudu.
तुर्कीः Kitabı okudu.

सन्दर्भ की बात की जाए तो निसंदेह स्पष्ट है कि यद्यपि हिंदी वाक्यों में "पढ़ ली" "पढ़ दी" में अंतर है, तुर्की अनुवाद में कोई अंतर नहीं पाया जाता। हिंदी की अपेक्षा तुर्की भाषा में इस तरह के प्रयोग के लिए सन्दर्भ में अभिव्यक्त अलग ही तरीक़े से किया जाता है।

तुर्की और हिंदी व्याकरण में एक और बड़ी समानता तो विशेषण को संज्ञा बनाने वाले प्रत्यय और कई अन्य प्रत्यय हैं जो की तुर्की छात्रों को समझने में आसान लगते हैं। जैसेः

तालिका 1

बिना प्रत्यय	प्रत्यय संग
सुन्दर	सुंदरता
अच्छा	अच्छाई
प्रयत्न	प्रयत्नशील, प्रयत्नशीलता
सब्ज़ी	सब्ज़ी वाला
शक्ति	शक्तिमान

तुर्की छात्र अपनी हिंदी सुधारते हुए इस बात को लेकर भी संशय में पड़ जाते हैं कि शब्दों का प्रयोग कैसे करें। हिंदी, उर्दू और हिंदुस्तानी में एक शाब्दिक संतुलन रहता है और इसे समझना कभी कभी तुर्की छात्रों के लिए कठिन होता है। उदाहरण के तौर पर कोई तुर्की छात्र हिंदी का कोई शब्द सीखता है परन्तु बोलचाल में प्रयोग नहीं कर पाता क्यूंकि वह शब्द कुछ भारतीयों को भारी और शुद्ध लगता है। यहीं पर एक सवाल उठता है कि शुद्ध हिंदी क्या है? वास्तव में भारतीय भाषाओं पर अंग्रेज़ी का जितना असर पड़ा है उतना तुर्की भाषा पर नहीं पड़ा तो तुर्की छात्रों को भारतीय भाषाओं में अंग्रेज़ी का मिश्रण अजीब प्रतीत होता है। दूसरी तरफ़ से उर्दू की भी बात है, हिंदी की बोलचाल में उर्दू के शब्द प्रचलन में हैं तो तुर्की छात्र इस बात को लेकर भी भ्रम में पड़ जाते हैं कि हिंदी बोलने में कहाँ अंग्रेज़ी का प्रयोग किया जाए और कहाँ उर्दू का। वैसे तो अंग्रेज़ी और उर्दू के मिश्रण पर व्यक्तिगत रूप से अलग अलग विचार पाये जा सकते हैं, जैसे कि किस मात्रा में मिश्रण करना चाहिए? मिश्रण करना भी चाहिए की नहीं? किया जाए तो किस भाषा का मिश्रण किस सन्दर्भ में किया जाना चाहिए और इसपर दूसरे लोगों की क्या प्रतिक्रिया होगी? इन तमाम प्रश्नों पर शायद भारतीय लोग उतना तर्क–विचार नहीं करते होंगे जितना हिंदी पढ़ने वाले तुर्की छात्र करते हैं क्यूंकि भारत में जो बहुभाषिकता है वह तुर्की में नहीं है तो तुर्की छात्र ऐसी बहुभाषिकता से परिचित न होने के कारण इन मुद्दों पर तर्क–विचार करते हैं। इन तमाम मुद्दों को समझने में अवश्य समय लगता है जैसे कि "प्रयत्न–कोशिश–ट्राई" इन शब्दों का कहाँ, कैसे और किस सन्दर्भ में प्रयोग करना सही रहता है इसे तुर्की छात्र समय में सीख जाते हैं। तुर्की में हिंदी शिक्षा में हिंदी के अलग अलग रूपों के बारे में पढ़ाया जाता है परन्तु फिर भी हिंदी या उर्दू पढ़ने वाले छात्र अधिकतर हिंगलिश से ज़्यादा यानी अंग्रेज़ी बिना डाले हिंदी/उर्दू बोलना पसंद करते हैं। कभी कभार तुर्की छात्र हिंगलिश बोलने वाले भारतीयों से हिंदी में बात करके अतृप्त भी रह जाते हैं। यह अवश्य कुछ छात्रों का व्यक्तिगत दृष्टिकोण ही है और सबकी अलग अलग राय होने के साथ ही भाषा के किस ढंग से प्रयोग करने को प्रत्येक छात्र अलग अलग वरीयता देते हैं। हिंदी पढ़ने वाले तुर्की छात्रों के लिए शायद सबसे आसान बात शाब्दिक समानता है जो कि इस लेख का पाँचवा चरण है। फ़ारसी, अरबी और तुर्की के हज़ारों शब्द भारतीय भाषाओं में शामिल हो गए हैं तो तुर्की छात्रों को इसे लेकर आसानी होती है। भले ही शब्द का मतलब पता भी न हो, तुर्की छात्र तुर्की भाषा जानने की वजह से शब्द का आसानी से पता लगाते हैं जबकि उनकी जगह कोई अंग्रेज़ी भाषी होता तो वह शब्द का पता नहीं लगा पाता। उन शब्दों पर थोड़ी नज़र डालें:

हिंदी में मौजूद कुछ तुर्की शब्द

बाजी, बेग़म, चाकू, तोप, तोपचु, तमंचा, तुग़रा, अर्सलान, चेचक, एलची, उर्दू, कनात आदि

हिंदी में मौजूद कुछ फ़ारसी शब्द

आहिस्ता, आवाज़, बग़ीचा, आवारा, आज़ाद, आरज़ू, अफ़साना, बादाम, अगर, बाग़, बिचारा, बराबर, बिरादर, बादशाह, पर्दा, पहलवान, तराज़ू, तर्जुमा, चेहरा, दामाद, दुकान, शहज़ादा, फ़रमान, किनारा, फ़लसफ़ा, गिरफ़्तार, हफ़्ता, हमेशा, ताज़ा, पिलाव, परेशान, पनीर आदि

हिंदी में मौजूद कुछ अरबी शब्द

अकल, जुमला, अजनबी, फ़क़ीर, फ़ायदा, फ़िक्र, हक़ीक़त, ख़राब, हादिसा, हाल, हाकिम, हर्फ़, ख़िलाफ़, इम्तिहान, काबिलियत, इंसान, हवा, औरत, दुनिया, काफ़ी, क़ानून, किताब, मजबूर, मशहूर, मुसाफ़िर, मिसाल, निकाह, रूह, साहिल, साहब, शायर, शर्त, ताल्लुक़, तस्वीर, तजरुबा, तसल्ली आदि।

हिंदी शिक्षा में एक और महत्वपूर्ण बिंदु सामग्री है। तुर्की में छात्र जब हिंदी सीखते हैं तो किस तरह की भाषाई संघर्षों का सामना करना पड़ता है या उन्हें किन चीज़ों को सीखने में क्या आसानी होती है इन तमाम चीज़ों का वर्णन हमने ऊपर किया हुआ है परन्तु हमने अभी तक सामग्री की बात नहीं की थी। ये सवाल उठते हैं कि तुर्की छात्र जब हिंदी सीखते हैं तो कहाँ से सीखते हैं और किस सामग्री का प्रयोग करते हैं। तुर्की में तुर्की भाषा द्वारा हिंदी सीखने और हिंदी के बारे में जानने के लिए कुछ किताबें, शोध कार्य तथा लेख उपलब्ध हैं जिनमें पाठकों को नज़र गढ़ाना चाहिए। अंकारा विश्वविद्यालय के इंडोलॉजी विभाग (भारतविद्या) के क्षेत्र में कई अविस्मरणीय योगदान किये सराहनीय इंडोलॉजिस्ट प्रो. डॉ कोरहान काया की लिखी हुई बहुसंख्यक किताबों में से एक किताब है जिसमें भारतीय भाषाओं के बारे में प्रचुर महत्वपूर्ण जानकारी पायी जाती है। "Hindistan'da Diller" (भारत में भाषाएँ) नामक सन २००५ में प्रकाशित इस किताब में तुर्की छात्रों को संस्कृत से लेकर द्रविड़ियन भाषाओं तक २० से अधिक भारतीय भाषाओं के बारे में जानकारी प्राप्त होती है। इन भाषाओं के इतिहास, व्याकरण, बोलने वालों की संख्या, साहित्य तथा साहित्यकार आदि भिन्न भिन्न प्रकार की मुख्य जानकारियाँ प्रो. डॉ कोरहान काया की लिखी हुई इस किताब में मौजूद हैं और प्रो. डॉ कोरहान काया की निम्नलिखित पंक्तियाँ इस किताब को प्रकट करती हैं:

"इस पुस्तक का उद्देश्य पाठकों को भारत की अनमोल बहुभाषिकता एवं भाषाओं की संरचना के बारे में जानकारी देने के साथ ही भारत की ओर आकर्षित करना भी है। यह जातीय बहुभाषिकता भारत की बहुमूल्य सांस्कृतिक विभिन्नता को प्रकट करती है।"

एक और उल्लेख करने योग्य पुस्तक है जो तुर्की छात्रों को सरल हिंदी व्याकरण सीखने और सुधारने में बहुत काम आती है। अंकारा विश्वविद्यालय के इंडोलॉजी विभाग (भारतविद्या) की एसोसिएट प्रो. एसरा कोकडेमिर ने "Hindi Dilbilgisi" (हिंदी व्याकरण) नामक अपनी इस पुस्तक में हिंदी पढ़ते तुर्की छात्रों के लिए सहजता से हिंदी व्याकरण पर रोशनी डाली है। यह शायद तुर्की भाषा में लिखी गयी पहली हिंदी व्याकरण पुस्तक हो, यह ज़रूर है कि छात्रों को इस पुस्तक से लाभ मिलता है। इस किताब में हिंदी देवनागरी और रोमन दोनों में लिखी गयी है और इस किताब में छात्रों को पढ़ने–लिखने के अभ्यास करने को भी मिलता है। एसोसिएट प्रो. एसरा कोकडेमिर के शब्दों में.

"इस किताब में दिये गए हिंदी व्याकरण के नियम इन पंद्रह अध्यायों में सीमित नहीं हैं और वैसे भी, इस किताब में "सरल हिंदी व्याकरण के नियम" निहित हैं। यह किताब नयी नयी हिंदी सीखने वालों के लिए एक गाइडबुक जैसी है इसलिए किताब में सरल व्याकरण के ही विषय दिये गए हैं और साथ में वाक्यों के तुर्की में अनुवाद भी किये गए हैं। समझने में पाठकों की सहायता करने के लिए किताब में कुछ वाक्य संरचनाओं के बारे में नोट तुर्की–अंग्रेज़ी में किये गए हैं जो वाक्य संरचनाएँ तुर्की भाषा में न हों। किताब के छठे अध्याय के बाद शोधकों अथवा हिंदी में रूचि रखने वालों की अपनी शब्दावली सुधारने के लिए लिखी बातचीतों का तुर्की में अनुवाद नहीं दिया गया है। प्रथम अध्याय में तुर्की में अनुवाद दिये जाने का उद्देश्य हिंदी व्याकरण के नियमों को सीखने के साथ ही दूसरे अध्याय में वाक्य संरचना समझने में पाठकों की सहायता करना है।"

हिंदी पढ़ते तुर्की छात्रों को इस विषय पर लेख भी पढ़ने को मिलता है जिससे कई ज्ञान उन्हें मिलते हैं। एक और महत्वपूर्ण कार्य का उल्लेख किया जाए तो TÖMER में शिक्षक ओज़ान जेम आयदन और अंकारा विश्वविद्यालय में एसोसिएट प्रो. एसरा कोकडेमिर दोनों मिलकर "Hindi Dilinin Yabancı Dil Olarak

Öğretimi" (विदेशी भाषा के तौर पर हिंदी शिक्षा) नामक एक लेख लिखा है जो तुर्की गणराज्य में हिंदी में प्रकाशित हुआ सबसे पहला लेख है और इसमें भी हिंदी शिक्षा के विषय पर कई महत्वपूर्ण जानकारी छात्रों को हासिल होती है। इस लेख में तुर्की–हिंदी व्याकरण तथा शब्दावली की तुलना की जाने के साथ ही भाषाओं के इतिहास के बारे में भी जानकारियाँ उपलब्ध हैं। तुर्की छात्रों को इस लेख को पढ़कर तुर्की और हिंदी के बीच रिश्ते को समझने में आसानी होती है।

निष्कर्ष

तुर्की में हिंदी तथा कई अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन करने वाले तुर्की छात्र भारतीय भाषा सीखने के सिलसिले में ऐसी भाषाई चुनौतियों का सामना करते हैं जिनपर हमने इस लेख में रोशनी डाली है। आज तुर्की में हिंदी और भारतीय भाषाओं की पढ़ाई जारी है और ऐसा प्रतीत होता है कि कम समय में हिंदी अध्ययन का स्तर बढ़ जाएगा। तुर्की में हिंदी सेवियों के योगदानों के अंतर्गत हिंदी प्रेमियों को हिंदी शिक्षा एक बेहतर पद पर हासिल होगी। ऐसे में यह भी संभव है कि तुर्की में हिंदी, भारतीय संस्कृति एवं भाषाओं का प्रचार–प्रसार भी बढ़ जाए। इस लेख की वजह से हिंदी पढ़ने वाले तुर्की छात्रों को हिंदी सीखने पर तर्क–विचार करने में आसानी होने के साथ ही एक भाषाई दृष्टिकोण से व्याकरणिक तथा कई अन्य भाषाई तत्वों की तुलना अपनी मातृभाषा से करके उन तत्वों को समझने में भी सहायता होगी। तुर्की में हिंदी शिक्षा और इंडोलॉजी के क्षेत्र में लगातार ऐसे बहुमूल्य योगदान दिये जाएँ तो हिंदी की लोकप्रियता और भी बढ़ जाएगी। हम तमाम हिंदी सेवी हिंदी शिक्षा का स्तर बढ़ाने और हिंदी का प्रचार–प्रसार करने के लिए लगातार काम करते रहेंगे और यह भी आशा करते हैं कि भूमंडलीकरण के ज़माने में कुछ भारतीयों को अपनी भाषा का महत्त्व याद आ जाए।

सन्दर्भ सूची

1. भारत में भाषाएँ, कोरहान काया, इमगे प्रकाशन, अंकारा, तुर्की, २००५, १३.
2. हिंदी व्याकरण, एसरा कोकडेमिर, ऐयटिम प्रकाशन, कोन्या, तुर्की, २०२०, ७.
3. हिंदी फॉर नॉन–हिंदी स्पीकिंग पीपल, कविता कुमार, रूपा प्रकाशन, दिल्ली, भारत, १९९४
4. मॉडर्न हिंदी ग्रामर, ओमकार नाथ कौल, डनवूडी प्रकाशन, स्प्रिंगफ़ील्ड, अमेरिका, २००८
5. तुर्कचे तैमैल दिलबिलगीसी (सरल तुर्की व्याकरण), मेहमेत हैनगिरमैन, ऐनगिन प्रकाशन, अंकारा, तुर्की, २००६
6. अतातुर्क व हर्फ़ देवरीमी, म.शाकिर ऊलकुताशर, जम्हूरियत प्रकाशन, इस्तांबुल, तुर्की, १९९८ पृष्ठ–६३